

डॉ. लेस्ली एलन, यहजेकेल, व्याख्यान 3, बाद में कमीशन, यरूशलेम के लिए संकेत और उनके अर्थ, यहजेकेल 3:16-5:17

© 2024 लेस्ली एलन और टेड हिल्डेब्रांट

यह डॉ. लेस्ली एलन द्वारा यहजेकेल की पुस्तक पर दिए गए उनके उपदेश हैं। यह सत्र 3 है, यरूशलेम के लिए बाद का आदेश, संकेत और उनका अर्थ। यहजेकेल 3:16-5:17.

हम अपने तीसरे व्याख्यान पर आ गए हैं, और हम 3:16 से आगे बढ़ रहे हैं, तथा हम अध्याय 15 के अंत तक चलते रहेंगे।

अगर मैं अंत में यह कहना भूल गया तो मैं यह बता दूँ कि अगला व्याख्यान अध्याय 6 और 7 से संबंधित होगा। आइए श्लोक 22 को देखकर शुरू करें, और आप देखेंगे कि एक कारण है कि मैं थोड़ी देर में पहले के श्लोकों पर वापस आना चाहता हूँ। श्लोक 22 से, 1:1 से 3:15 तक के पैटर्न का पालन किया जाता है। श्लोक 20 से 24a में एक दिव्य, एक और दिव्य दर्शन है, और फिर एक दिव्य भाषण है जो श्लोक 24 के दूसरे भाग से 5:17 तक चलता है। और इसलिए उस पैटर्न में समानता है।

यह पैटर्न 3:3 से 21 में टूटा हुआ है। ये आयतें 3:3 से 21 नहीं हैं; ये 3:16 से 21 हैं। यह बताता है कि यहजेकेल को निर्वासितों के लिए एक पहरेदार के रूप में नियुक्त किया गया था।

और, वास्तव में, यह एक नया आयोग है। और मुझे लगता है कि यह उनके पहले के आयोगों से बिल्कुल अलग है। और मैं आगे जाकर समझाने की कोशिश करूँगा।

3:16 से 21 में, यहजेकेल को पहरेदार की भूमिका दी गई है, जो चेतावनी देता है कि अगर कोई परेशानी निकट आती है। उसे निर्वासितों को चेतावनी देनी है कि ऐसा है। उम्मीद है कि वे सुनेंगे और परेशानी से बचेंगे।

यह उनके पहले के आदेश से बहुत अलग लगता है, जो उन्होंने न्याय के भविष्यवक्ता के रूप में दिए थे, चाहे वे सुनें या न सुनें। वैसे भी, हमें पुस्तक की संरचना के बारे में फिर से कुछ कहना चाहिए। हमने अपने पहले व्याख्यान में इसके बारे में संक्षेप में बात की थी: पहली नज़र में, तारीख से संकेतित एक कालानुक्रमिक सहज गति है।

हम 593 से शुरू करते हैं और पुस्तक में लगातार आगे बढ़ते हैं। यह अध्याय 8 और पद 1 में दर्शाया जाएगा। 6वें वर्ष में, 6वें महीने में, महीने के 5वें दिन, एक नया संदेश आया। और वह अब यहजेकेल की पुस्तक के दूसरे भाग में है।

और यह अध्याय 1 और श्लोक 2 से एक विकास है। महीने के 5वें दिन, यह 5वां वर्ष था। और इसलिए, हम लगातार आगे बढ़ रहे हैं। और यही वह धारणा है जो हमें दी जा रही है।

आधे रास्ते में, हम 587 की चरम तिथि पर पहुँचते हैं, या वह समय जब 587 में यरूशलेम के विनाश की खबर आई। और वहाँ से हम उद्धार के एक नए संदेश के साथ आगे बढ़ते हैं। और यह पुस्तक को देखने का एक बहुत ही वैध तरीका प्रतीत होता है।

वास्तव में, मुझे लगता है कि यह पुस्तक के पहले संस्करण को दर्शाता है। लेकिन फिर हमें एक भिन्नता भी मिलती है - वास्तव में, भिन्नताओं की एक श्रृंखला - कि यह उतना सरल नहीं है।

ऐसा लगता है कि दूसरा संस्करण एक अलग रास्ता अपनाना चाहता है। और हम इसे पहले ही देख लेते हैं। जैसा कि मैंने पहले व्याख्यान में कहा था, अध्याय 29 में, मिस्र के खिलाफ एक संदेश है। अगला संदेश अचानक 571 पर आगे बढ़ जाता है, जो कि 573 के अध्याय 40 में अंतिम तिथि से भी बाद का है। और इसलिए, मिस्र के खिलाफ उस बाद के दैवज्ञ में, हम एक विषयगत विषय पाते हैं कि यह आगे की ओर बढ़ रहा है।

और मिस्र के खिलाफ एक और भविष्यवाणी भी पुरानी भविष्यवाणी के साथ ही उद्धृत की गई है। लेकिन हम आगे बढ़ चुके हैं। हम एक अलग समय अवधि पर हैं।

हमें अध्याय 21, श्लोक 17 में स्पष्ट रूप से बताया गया है। अब, एक विषयगत दृष्टिकोण का संकेत है। और मुझे लगता है कि यहाँ भी यही हो रहा है: हमारे पास एक ही विषय है: यहजेकेल को नियुक्त करना, उसे परमेश्वर द्वारा एक नया आदेश दिया गया है।

लेकिन मुझे लगता है कि यह वास्तव में उनके मंत्रालय के उत्तरार्ध पर लागू होता है। और यह उद्धार के संदेशों के साथ चलता है, जो 5.8.7 के बाद आया। और अगर ऐसा है, तो हमें बहुत सावधानी से सोचना होगा। लेकिन मुझे लगता है कि आगे, और हमें किताब के अन्य अध्यायों तक आने तक इंतजार करना होगा, कि किताब के पहले भाग में अन्य उदाहरण हैं जहाँ हम 587 से पहले नहीं हैं। आखिरकार, हम 5.8.7 के बाद हैं। और इसलिए ऐसा लगता है कि एक दूसरा संस्करण है, जहाँ बाद की सामग्री को कालानुक्रमिक रूप से स्थानांतरित किया गया है, और बाद की सामग्री को किताब में आगे बढ़ाया गया है।

ऐसा लगता है कि यही हो रहा है। और इसलिए अस्पष्ट रूप से कालानुक्रमिक रूप से दो हिस्सों के पहले संस्करण के साथ, हमारे पास चीजों को देखने का यह दूसरा तरीका है, जो अधिक विषयगत रेखा लेता है, न केवल मिस्र के खिलाफ उस भविष्यवाणी में, बल्कि मिस्र के खिलाफ बहुत पहले की भविष्यवाणी से मेल खाता है और उसके साथ सेट किया गया है। लेकिन साथ ही, मुझे लगता है कि इस बाद के आयोग में, हम देखेंगे कि यह वॉचमैन आयोग पूर्ण निर्णय, कट्टरपंथी निर्णय और कोई विकल्प नहीं के भविष्यवक्ता के रूप में पहले आयोग से बहुत अलग है।

यह तो आना ही था। और हमें अब निर्वासितों को दिए गए विकल्प का तत्व देखना चाहिए। तो, यह मोक्ष काल से अधिक संबंधित है और 587 के निर्वासितों की जिम्मेदारी है जिसमें 597 लोग भी शामिल हैं क्योंकि उन्होंने मोक्ष का संदेश स्वीकार किया था, लेकिन इसके साथ ही, उन्हें इस पर

खरा उतरने और मोक्ष के वास्तव में होने से पहले भी इसके अनुरूप जीवन जीने की जिम्मेदारी दी गई थी।

भूमि पर वापसी और उसके बाद आने वाला गौरवशाली समय। तो, उस मामले में, जो हुआ वह यह है कि जब हम 3:16 पर आते हैं, तो हमारे पास यह सात दिनों के अंत में होता है, है न? खैर, यह 3:15 को उठाता है, है न? मैं उनके बीच बैठा रहा, सात दिनों तक स्तब्ध रहा, और उसे दर्शन और आदेश के सदमे से उबरने के लिए उस समय की आवश्यकता थी। लेकिन सात दिनों के अंत में, प्रभु का वचन मेरे पास आया।

ठीक है, आपको लग रहा है कि हम सुचारू रूप से आगे बढ़ रहे हैं। यह अगली बात थी जो हुई। लेकिन फिर श्लोक 22 को देखें।

फिर प्रभु का हाथ वहाँ मुझ पर था। कहाँ? खैर, श्लोक 22 वास्तव में श्लोक 15 को संदर्भित करता है। और यह श्लोक 15 की निरंतरता की तरह लग रहा था।

क्योंकि मैं तेल-अबीब में निर्वासित लोगों के पास आया था जो कबार नदी के किनारे रहते थे। मैं उनके बीच बैठा रहा, सात दिनों तक स्तब्ध रहा। पद 22 में, प्रभु का हाथ वहाँ मुझ पर था।

और उसने कहा, उठो, घाटी में जाओ। और हम वहाँ हैं। तो, 22 आयत 15 से आगे बढ़ने का आभास देता है।

और अगर मैं सही हूँ, तो सात दिनों के अंत में, 16 की शुरुआत में, मूल रूप से श्लोक 22 की प्रस्तावना थी। सात दिनों के अंत में, तब प्रभु का हाथ मुझ पर था, और यह जारी है। लेकिन प्रभु का वचन मेरे पास आया, और इसके बाद यह प्रहरी आदेश दिया गया है।

और यह वास्तव में एक तरह की साहित्यिक घुसपैठ है, लेकिन एक जानबूझकर किया गया। एक जानबूझकर किया गया। यह जकेल के कमीशन के विषय से आगे बढ़ते हुए, आइए हम यह जकेल के पास मौजूद एक और कमीशन के बारे में सोचें।

लेकिन हम देखेंगे कि यह एक अलग आदेश है और यह यरूशलेम के पतन के बाद ही प्रभावी हुआ। अब, मुझे ऐसा क्यों कहना चाहिए? खैर, मैं आपको कुछ ऐसा बता सकता हूँ जो सच है, लेकिन आप अभी तक नहीं जानते। अध्याय 33 में, हमारे पास यह जकेल के पहरेदार, या प्रहरी, या संतरी के रूप में नियुक्त किए जाने का एक लंबा विवरण है।

और यहाँ, आगे की आयतों 17 में, अध्याय 33 की आयतों 7 से 9 का एक अंश है। और उन्हें यहाँ दोहराया गया है। और यह शुरुआत के लिए बहुत महत्वपूर्ण है क्योंकि जब हम 33 पर आते हैं, तो हम उस बाधा को पार कर चुके होते हैं, और ऐसा लगता है कि हम यरूशलेम की सफल घेराबंदी, यरूशलेम के पतन से आगे निकल चुके हैं।

और अब हम एक अलग समय सीमा में हैं। तो यह बहुत दिलचस्प है, और यह मेरी बात का बैकअप है। यह चौकीदार विषय बहुत दिलचस्प है क्योंकि इससे पहले एक भविष्यवक्ता था, बहुत पहले नहीं, लेकिन उससे पहले, यिर्मयाह।

यिर्मयाह में एक पहरदार विषय का उल्लेख है, और यह पहले के भविष्यवक्ताओं का वर्णन करता है। यिर्मयाह 6:17 में, मैंने तुम्हारे लिए पहरदारों को खड़ा किया, तुरही की आवाज़ पर ध्यान दो, लेकिन उन्होंने कहा कि हम ध्यान नहीं देंगे। वास्तव में, हमारे पास जो कमीशन का विवरण है, वह अध्याय 3 में संक्षिप्त रूप में और अध्याय 33 में पूर्ण रूप में है, यह 6:17 का बहुत अधिक विकास है, और मुझे आश्चर्य नहीं होगा यदि 597 से पहले, बेबीलोनिया में निर्वासित होने से पहले, वहाँ मंदिर में ड्यूटी पर, उसे मंदिर के प्रांगण में खड़े होने और यिर्मयाह को उपदेश देते हुए सुनने और इस पहरदार विषय, इस पहरदार विषय को उठाने का अवसर मिला हो।

यह वही है जो यहाँ लंबे तरीके से विकसित किया गया है और यह जकेल के दूसरे कार्य पर अधिक पूर्ण रूप से लागू होता है। यह प्रहरी विषयवस्तु परमेश्वर के लोगों के हितों को ध्यान में रखती है। मूल थीसिस यह है कि परेशानी से बचा जा सकता है, और लोगों के लिए एक चेतावनी है, और उम्मीद है कि वे सुनेंगे।

उम्मीद है कि वे सुनेंगे। और इसलिए, निरपेक्ष, अपरिहार्य निर्णय के भविष्यवक्ता के रूप में पहले की नियुक्ति से एक अलग तरंगदैर्घ्य, चाहे वे सुनें या न सुनें। और हम पाते हैं कि यहाँ दो छोटे-छोटे विषय सामने लाए गए हैं।

सबसे पहले, यह जकेल की जिम्मेदारी है कि वह एक पहरदार की तरह काम करे और आने वाली मुसीबत के बारे में चेतावनी दे, ताकि इस्राएल सावधानी बरते और बच सके। हे मनुष्यों, मैंने तुम्हें इस्राएल के घराने के लिए एक पहरदार बनाया है। जब भी तुम मेरे मुँह से कोई शब्द सुनो, तो तुम उन्हें मेरी ओर से चेतावनी देना।

अगर मैं दुष्टों से कहता हूँ, तुम निश्चित रूप से मर जाओगे, और तुम उन्हें चेतावनी नहीं देते या दुष्टों को उनके दुष्ट मार्ग से चेतावनी देने के लिए नहीं बोलते, ताकि उनका जीवन बच जाए, तो वे दुष्ट लोग अपने अधर्म के लिए मर जाएँगे। तो, एक विकल्प था। लोग जीवित रह सकते थे, या वे मर सकते थे।

सबसे पहले, यह जकेल की एक जिम्मेदारी है। यह आप पर निर्भर है, यह जकेल। सुनिश्चित करें कि आप इस संदेश को आगे बढ़ाएँ, अन्यथा मैं आपको जवाबदेह ठहराऊँगा।

मैं तुम्हें जवाबदेह ठहराऊँगा। यदि तुम उस संदेश को आगे नहीं बढ़ाते, तो यह तुम्हारी गलती होगी। क्योंकि श्लोक 18 कहता है, वे दुष्ट लोग चेतावनी को सुने बिना अपने अधर्म के कारण मर जाएँगे, परन्तु मैं उनके खून का बदला तुम्हारे हाथ से लूँगा।

तो यह एक बहुत बड़ी जिम्मेदारी है। लेकिन फिर सुनने वालों पर भी जिम्मेदारी है। क्या वे सुनेंगे या नहीं? उन्हें सुनना चाहिए, वरना उन्हें इसका खामियाजा भुगतना पड़ेगा।

लेकिन अगर तुम दुष्टों को चेतावनी दोगे और वे अपनी दुष्टता या अपने दुष्ट मार्ग से नहीं फिरेंगे, तो वे अपने अधर्म के कारण मर जाएंगे, लेकिन तुम अपना जीवन बचा लोगे। तुम बच जाओगे। तुमने अपना काम कर दिया है।

उन्होंने अपना काम नहीं किया। और इसलिए, हम देखते हैं कि यह कितना विरोधाभासी है। और यह एक नए प्रकार के संदेश की शुरुआत है, जिसमें एक तरह का डंक है।

यहेजकेल के पहले भाग में, उन पूर्ण न्याय के अध्यायों के बीच में, आपको ये उद्धार के वचन मिलते हैं, जिनमें एक डंक जुड़ा हुआ है। और परमेश्वर जो कहता है, उसके अनुसार जीने की जिम्मेदारी। बाद में, मैं बड़े अक्षर 'J' वाले न्याय और छोटे अक्षर 'j' वाले न्याय के बीच अंतर करूँगा। और यिर्मयाह को दिए गए पहले आदेश में बड़े अक्षर 'J' वाले न्याय की बात कही गई थी। लेकिन फिर भी, 587 के बाद, एक छोटे मामले 'j' वाले न्याय के संदेश की अभी भी आवश्यकता थी। और व्यक्तिगत रूप से, हम अब पूर्ण विनाश और इसी तरह के पूर्ण न्याय के बारे में बात नहीं कर रहे हैं, जिसे टाला नहीं जा सकता।

लेकिन हम परमेश्वर के लोगों के बीच लोगों या व्यक्तियों के समूहों के बारे में बात कर रहे हैं जो परमेश्वर के मार्ग से भटकने पर मुसीबत में पड़ सकते हैं। उनके लिए अभी भी मुसीबत है। और इसलिए, यह चेतावनी दी जानी चाहिए।

इसलिए, हालांकि यहेजकेल उद्धार का संदेशवाहक है, फिर भी इसमें थोड़ा न्याय शामिल है। और हम बाद में, बहुत बाद में देखेंगे, कि नया नियम इस बारे में जानता है। और जहां तक ईसाई का सवाल है, इसमें अभी भी थोड़ा न्याय शामिल है।

लेकिन हम यहाँ हैं। यह यहेजकेल की चेतावनी है। और चेतावनी यह है कि अगर वहाँ ऐसे लोग हैं जो अपने दुष्ट तरीकों का पालन करना जारी रखते हैं, तो भगवान को प्रतिशोध लेना होगा, ठीक है, उनके लिए परेशानी है।

उनके लिए मुसीबत है। लेकिन अगर यहेजकेल उन्हें चेतावनी देता है, ओह, मुझे खेद है, और वे पश्चाताप करते हैं, तो यह अद्भुत है। और यह वह अवसर है।

और आपने यह बढ़िया कहावत लिखी है कि श्लोक 18 में इरादा उनके जीवन को बचाना है। आप उन्हें चेतावनी देते हैं; वे चेतावनी पर ध्यान देते हैं, और पश्चाताप करते हैं। ओह, ठीक है, वे जीवित रहने वाले हैं।

और यह हमें यहेजकेल के उद्धार के वचनों में एक बहुत ही महत्वपूर्ण शब्द से परिचित कराता है, शब्द जीवन, संज्ञा जीवन, और क्रिया जीवित रहना। यह बहुत महत्वपूर्ण है और यह यिर्मयाह के उद्धार के वचनों में अर्थ की संपूर्ण पूर्णता को ग्रहण करता है। निर्वासन की आभासी मृत्यु के विपरीत, भूमि में वापस जीवन का वादा है।

और वे अब भी उस जीवन की आशा कर सकते हैं। और इसलिए, यह उद्धार के संदेश का हिस्सा है। वास्तव में, यदि आप अध्याय 33 और श्लोक 11 को देखें, एक श्लोक जिसे अध्याय 3 में वापस

नहीं रखा गया है, तो आप पाएंगे कि वहाँ एक कथन है कि परमेश्वर के दिल में निर्वासितों का हित है।

प्रभु परमेश्वर कहते हैं, मेरे जीवन की शपथ, यह 33:11 है, मैं दुष्टों की मृत्यु से प्रसन्न नहीं होता, बल्कि इससे प्रसन्न होता हूँ कि दुष्ट अपने मार्ग से फिरकर जीवित रहें। लौट आओ, अपने बुरे मार्ग से फिर जाओ। तुम क्यों मरना चाहते हो? और यही है।

यही पूरा संदेश है। और इसलिए, यह भगवान की कृपा है कि यह चेतावनी दी गई है। इसलिए उन्हें दंडित करने की आवश्यकता नहीं है।

उसे निर्वासितों में से दुष्ट लोगों के समूहों या व्यक्तियों पर यह न्यायदंड लाने की आवश्यकता नहीं है। और इसलिए यह एक बहुत ही महत्वपूर्ण श्लोक है जो यहाँ इस पहरेदार आयोग को रेखांकित करता है और नियंत्रित करता है। परमेश्वर की अंतिम इच्छा उन लोगों को जीवन की नईता देना है जो अपनी बुरी जीवनशैली से दूर हो जाते हैं।

लेकिन उद्धार बिना किसी शर्त के नहीं दिया जाता। परमेश्वर के लोगों, निर्वासितों के लिए यह दायित्व है। वे अभी भी निर्वासित हैं, लेकिन जीवन की नई शुरुआत की प्रतीक्षा कर रहे हैं और अब भी उस जीवन की आशा कर रहे हैं।

लेकिन जो लोग उस बुरी जीवनशैली में बने रहते हैं, वे ईश्वर की सज़ा के हकदार हैं। लेकिन वह जीवन पश्चाताप और अच्छे जीवन पर निर्भर करता है। नए नियम का एक दिलचस्प संदर्भ है जिसके बारे में विद्वानों का मानना है कि यह अध्याय 3 और अध्याय 33 और उस पहरेदार विषय पर बहुत अधिक निर्भर करता है।

यह इब्रानियों की पुस्तक के अध्याय 13 के अंत में और श्लोक 17 में है। और सुनिए कि इब्रानी के लेखक ने क्या कहा है। और ध्यान दें कि यह उस पहरेदार के आदेश के कितने करीब है जो यहजेकेल को मिला था।

अपने अगुवों की आज्ञा मानो और उनके अधीन रहो, क्योंकि वे तुम्हारी आत्माओं पर नज़र रखते हैं, और वे इसका हिसाब देंगे। जिस तरह यहजेकेल को ज़िम्मेदार लोगों का हिसाब देना पड़ा था, उसी तरह इन अगुवों को भी जवाब देना होगा क्योंकि वे मण्डली की आत्माओं पर नज़र रखते थे। उन्हें यह काम खुशी से करना चाहिए न कि आर्हें भरते हुए, क्योंकि ऐसा करना तुम्हारे लिए नुकसानदेह होगा।

कि अगर लोग, ईसाई, अपने पाप में लगे रहते हैं, तो सारा नुकसान उन पर ही होने वाला है। और इसलिए, आपके पास थोड़ा सा जे के साथ न्याय है, और आपके पास नेताओं को जवाबदेह बनाया गया है, और आपके पास नेताओं को मण्डली पर पहरेदार होने का काम सौंपा गया है। और विद्वानों का दृढ़ विश्वास है कि यह वास्तव में, यहजेकेल 3 और 33 में दी गई सामग्री की प्रतिध्वनि है।

और वास्तव में, कोई यह कह सकता है कि इब्रानियों के लेखक ने उन आयतों को बहुत गंभीरता से लिया। क्योंकि उन सभी चेतावनी भरे अंशों के साथ, वह यहजेकेल के पहरेदार के आदेश को पूरी तरह से जी रहा है। लेकिन वह इसे उन लोगों के संदर्भ में निभा रहा है जो मसीह को मानते हैं और स्पष्ट रूप से चर्च का हिस्सा हैं।

और इसका मतलब यह है कि अध्याय 3 में, यह पहरेदार विषय कालानुक्रमिक रूप से टूटता है। और अध्याय 3 में पहले, 597 निर्वासितों के लिए एक संदेश था, पूर्ण न्याय का संदेश। यरूशलेम जल्द ही गिरने वाला है।

593 में, यहजेकेल को पहले से ही कुछ ऐसा कहने के लिए कहा गया है जो 587 में होगा: यहूदा का विनाश और यरूशलेम का पतन। और इसलिए यह पूर्ण न्याय के इस प्रारंभिक संदेश के साथ बहुत अच्छी तरह से फिट बैठता है। लेकिन फिर 3:16-21 587 निर्वासितों के बारे में आता है, वह अधिक सामान्य समूह जो 597 में नहीं आया था, यरूशलेम के वीआईपी, बल्कि सामान्य जनता जो 587 में आई थी।

और यही संदेश उन्हें दिया गया है। और जैसे-जैसे हम किताब के पहले हिस्से में आगे बढ़ेंगे, हम पाएंगे कि ये संदेश बाद के समूह को भी दिए गए हैं। और मुझे लगता है कि इसका कारण यह है कि ऐसा क्यों किया जाना चाहिए था? इसे दूसरे हिस्से में क्यों नहीं रखा जा सकता था? क्योंकि पूरी किताब को अंततः निर्वासितों के दोनों समूहों के साथ-साथ दूसरे और पहले समूह द्वारा पढ़ा जाना है।

और पुस्तक के पहले भाग में दूसरे समूह से सीधे बात करने का अवसर लिया गया है। क्योंकि आप यहजेकेल के पहले भाग में बहुत आगे जा सकते हैं, और आप बस कह सकते हैं, ठीक है, हाँ, यह 597 निर्वासितों के लिए एक संदेश था, है न? और यह अब हुआ है, यरूशलेम के पतन के बारे में सारी बातें, यह हो चुका है, और वह पुरानी बातें। ठीक है, हम इसे सुनते हैं और इससे सीखने की कोशिश करते हैं।

लेकिन इसका हमसे सीधा संबंध नहीं है। और निर्वासितों के दूसरे समूह की दिलचस्पी इसमें है। क्योंकि हर बार, हमें उनसे सीधे अपील करनी पड़ती है।

यह आपके लिए है। यह आपके लिए है। तो, शुद्ध निर्णय वाली बातें सुनें, और फिर आंशिक निर्णय वाली बातें सुनें, जो सीधे आपको पसंद आती हैं।

और इसलिए ऐसा लगता है कि वहाँ जानबूझकर मिश्रण किया गया है। ठीक है। खैर, इससे मामला जटिल हो जाता है।

लेकिन यह सच है। ऐसा लगता है कि इसका उद्देश्य यही है। और इसलिए हमने पहले अध्याय 3 और 1 और 2 में देखा है कि इसमें एक तरह का 'इसे ले लो या छोड़ दो' वाला रवैया है।

लेकिन अब, इस छोटे से खंड में, यह अलग है। अगर वे सुनते हैं, तो एक परिणाम होता है। अगर वे नहीं सुनते हैं, तो दूसरा परिणाम होता है।

एक विकल्प है। अगर लोग पैगंबर की चेतावनियों की अनदेखी करते हैं, तो यह उनके लिए बहुत बुरा होगा। लेकिन एक विकल्प है।

और पहली बार एक विकल्प है। ठीक है। 3:22 अध्याय के पहले भाग से शुरू होता है और वहीं से आगे बढ़ता है।

और यह 3:15 से उस क्रिया विशेषण को दोहराता है। और मेरा सुझाव है कि 16 की शुरुआत में सात दिन भी श्लोक 22 से संबंधित है। और यही वह था जो 16 के दूसरे भाग को श्लोक 21 तक जानबूझकर बाधित करने से पहले किया गया था।

हम 3:22 से लेकर अध्याय 5 के अंत तक संदेशों की एक नई श्रृंखला की ओर बढ़ते हैं। और ये प्रतीकात्मक कार्यों की एक श्रृंखला है जिसे यहजेकेल को करने के लिए कहा गया है। वास्तव में, कुल पाँच हैं। पाँच प्रतीकात्मक कार्यों की एक श्रृंखला जिसे 3:22 से आगे के पाठ में एक साथ समूहीकृत किया गया है।

और परमेश्वर भविष्यवक्ता को इन प्रतीकात्मक कार्यों को करने का आदेश देता है। और प्रत्येक मामले में, वह एक व्याख्या देता है। जैसा कि हमने अपने पहले व्याख्यान में कहा था, यह भविष्यवाणी करने का एक दिखावटी तरीका है जिसे यहजेकेल को संभालने के लिए कहा जाता है।

इनमें से एक बात पहले के शास्त्रीय भविष्यवक्ताओं में भी पाई जाती है, लेकिन यहजेकेल की पुस्तक में काफी विकसित है। हम कहते हैं कि कर्म शब्दों से ज़्यादा ज़ोर से बोलते हैं। लेकिन यहाँ यहजेकेल में, हम कर्मों और शब्दों का संयोजन पाते हैं।

यह संयोजन वास्तव में बहुत ज़ोर से बोलता है। बेशक, यह दिखावा और बताना नए नियम और ईसाई चर्च में भी थोड़े अलग तरीके से होता है क्योंकि हमारे पास भी हमारे बहुमूल्य प्रतीकात्मक कार्य, हमारे अनुष्ठान, बपतिस्मा और भोज के संस्कार हैं।

और ये वास्तव में भविष्यवक्ताओं के प्रतीकात्मक कार्यों पर वापस जाते हैं, जो एक व्याख्या के साथ होते हैं। और इसलिए, चर्च के लिए भी, एक तरह का शो-एंड-टेल है। और हम, हमारे मामले में, कुछ चीजें करते हैं।

और हमें जो कुछ हम कर रहे हैं उसकी व्याख्या दी गई है। और इस मामले में, पैगंबर कुछ खास चीजें कर रहे हैं। और हम देखेंगे कि ये पाँच अलग-अलग चीजें क्या हैं।

लेकिन सबसे पहले, जैसा कि 1:3 में, पद 22 से 24 की शुरुआत में, हमें एक छोटा सा दर्शन मिलता है। अब यह कोई लंबा दर्शन नहीं है, बल्कि एक बार फिर से परमेश्वर का एक छोटा सा दर्शन है। उठो, घाटी में जाओ, और वहाँ मैं तुमसे बात करूँगा।

इसलिए, मैं उठकर घाटी में चला गया, और प्रभु की महिमा वहाँ खड़ी थी, जैसी महिमा मैंने किबर नदी के किनारे देखी थी। और मैं अपने चेहरे के बल गिर पड़ा, और फिर आत्मा मुझमें प्रवेश कर गई और मुझे मेरे पैरों पर खड़ा कर दिया, और उसने मुझसे बात की और मुझसे कहा। और यहाँ हम एक संदेश के साथ इस दर्शन को देख सकते हैं।

दर्शन से पता चलता है कि यह वास्तव में ईश्वर की ओर से है। और फिर, हमने प्रभु के हाथ का भी उल्लेख किया है। शायद, नहीं, हम इस मामले में ऐसा नहीं कहते।

हाँ, हम करते हैं, 22 की शुरुआत में। वहाँ प्रभु का हाथ मुझ पर था। हाँ।

और इसलिए यह संकेत है। यह आ रहा है, कुछ महत्वपूर्ण बात। ध्यान दें।

ओह, यह चोट लगी। हाँ। मैंने आपका ध्यान आकर्षित किया, है न? भगवान द्वारा उसके सिर पर दिया गया यह थप्पड़ एक तरह की प्रारंभिक सूचना है कि कुछ होने वाला है।

और अक्सर एक दर्शन जैसा कि यहाँ है। और इसलिए, एक और ईश्वरीय दर्शन और यहेजकेल के चौंकाने वाले समर्पण और फिर इस आत्मा द्वारा खड़े होने के लिए सशक्तीकरण का यह संक्षिप्त वर्णन है। यह आत्मा उसे सशक्त बनाती है।

फिर, नबी को घर जाने और लोगों से अलग रहने के लिए कहा जाता है। और यह बहुत अजीब है क्योंकि आप उम्मीद करते हैं कि यहेजकेल से कहा जाएगा, ओह, यह न्याय का पहला संदेश है जिसे आपको पारित करना है। लेकिन नहीं, घर जाओ और कुछ मत करो।

यह बहुत ही अजीब बात है। और यहेजकेल को यह बहुत ही अप्रत्याशित लगा होगा क्योंकि उसे लगा कि उसे कोई संदेश मिलेगा जिसे वह आगे बढ़ा सकता है। लेकिन उसे ऐसा नहीं मिला।

घर जाओ और घर पर ही रहो, और कुछ भी भविष्यवाणी मत करो। और हम पूछते हैं, अच्छा, ऐसा क्यों होना चाहिए? और संभवतः यह भगवान के अपने लोगों से अलगाव का प्रतीक है। वास्तव में, सख्ती से, कहने के लिए कुछ भी नहीं है।

कहने को कुछ नहीं है। वे दोनों बहुत अलग-थलग हैं। परमेश्वर के लोगों ने परमेश्वर की इच्छा को पीछे छोड़ दिया है, परमेश्वर के वाचा मानकों में निर्धारित किया है, और उनके बीच एक बड़ी खाई तय हो गई है।

और इसलिए वह एकांत और वह मौन, यह वास्तव में दोनों के बीच उस महान अंतर को दर्शाता है। और उसे चुप रहना है। और श्लोक 24, अपने आप को अपने घर के अंदर बंद कर लो, क्योंकि तुम नश्वर हो, तुम्हारे ऊपर रस्सियाँ लगाई जाएँगी, और इसलिए तुम उनसे बंधे रहोगे ताकि तुम लोगों के बीच बाहर न जा सको, भले ही तुम चाहो।

शायद मैं उनसे कुछ ऐसा कह सकता हूँ जो मुझे कहना चाहिए, नहीं, तुम्हें बाँध दिया जाएगा, और तुम घर में ही नज़रबंद हो जाओगे, और तुम लोगों के बीच बिल्कुल भी नहीं जाओगे। और

फिर, इससे भी बढ़कर, मैं तुम्हारे लिए शारीरिक रूप से बोलना असंभव बना दूँगा। तुम गूँगे रह जाओगे, इसलिए यह और अधिक मजबूर नहीं किया जा सकता कि यह जकेल कुछ न बोले।

पद 26 में, मैं तुम्हारी जीभ को तुम्हारे मुँह की छत से चिपका दूँगा, ताकि तुम चुप हो जाओ और उन्हें फटकारने में असमर्थ हो जाओ। और यह सब बहुत चौंकाने वाला है। और ऐसा इसलिए है क्योंकि वे एक विद्रोही घराने हैं, और उनके बीच यह अंतर, वास्तव में, कहने के लिए कुछ भी नहीं है।

और ऐसा लगता है कि यह आगे भी जारी रहा, लेकिन श्लोक 27 में एक वादा है कि उसे किसी समय संदेश दिए जाने वाले हैं। जब मैं तुमसे बात करूँगा, तो मैं तुम्हारा मुँह खोलूँगा, और तुम उनसे कहोगे, प्रभु परमेश्वर इस प्रकार कहता है। यह फिर से जादुई संदेशवाहक सूत्र है।

और जब का मतलब है जब भी। जब भी मैं आपसे बात करता हूँ और आपको कोई संदेश देता हूँ, तो आप उसे आगे बढ़ा सकते हैं। लेकिन ऐसा बहुत बार नहीं होगा।

मुझे नहीं लगता कि ऐसा अक्सर होगा। और ऐसा लगता है कि यह 587 तक जारी रहा, कि कभी-कभी यह जकेल को संदेश दिए जाते थे, लेकिन बाकी समय वह घर पर ही रहता था, और वह गूँगा था, चाहे वह सचमुच गूँगा था या फिर यह एक मनोवैज्ञानिक बात थी। मुझे नहीं पता कि उसे लगा कि उसे चुप रहना चाहिए, लेकिन ऐसा था।

लेकिन फिर हम यह जकेल 24 और श्लोक 27 पर आते हैं, जहाँ इस गूँगेपन के बीच सिर्फ बीच-बीच में बोलने का प्रतिबंध हटा दिया गया है। यह जकेल 24 और श्लोक 27, और अब हम 587 पर आते हैं। उस दिन, जब यरूशलेम के पतन की खबर आएगी, तो तुम्हारा मुँह उस व्यक्ति के लिए खुल जाएगा जो बचकर आया है और खबर लाया है, और तुम बोलोगे और फिर चुप नहीं रहोगे।

तो, यह एक बहुत ही प्रभावशाली प्रतीकात्मक क्रिया है, जो निष्क्रियता है, जो अपने आप में बहुत कुछ कहती है, है न? तो, यह है। तो, जब भी मैं आपसे बात करता हूँ, तो आप बोल सकते हैं, लेकिन मेरे आदेश पर बस बीच-बीच में बोलना होगा, और अन्यथा, मेरे पास उनसे कहने के लिए कुछ नहीं है, और आपके पास उनसे, इन निर्वासितों से कहने के लिए कुछ नहीं है। लेकिन फिर हमारे पास दूसरी प्रतीकात्मक क्रिया है, और हम अध्याय 4 पर आगे बढ़ते हैं। और यह काफी जटिल है।

यह जकेल को किसी चीज़ पर खेलना है, और उसे एक ईंट लेनी है, उसे एक साधारण मिट्टी की ईंट लेनी है, और उसे उस पर एक शहर बनाना है, और वह शहर यरूशलेम है। और उसे वह ईंट लेनी है, और यह स्पष्ट रूप से वह समय है जब उसे कुछ कहने के लिए कहा जाता है। और इस प्रतीकात्मक क्रिया में, वह उस ईंट को लेता है, और उसके आस-पास लोग होते हैं, और वे, ओह, यह क्या है? ओह, यह एक शहर है।

और शायद वे, ओह हाँ, ठीक है, ठीक है, यरूशलेम। और फिर उसे घेराबंदी के कामों के छोटे मॉडल बनाने थे, युद्ध में इस्तेमाल किए जाने वाले उपकरण और इसी तरह की अन्य चीज़ें जो

घेराबंदी के लिए इस्तेमाल की जाती थीं। और उसे इन छोटे मॉडलों को इस ईंट के चारों ओर रखना था।

और फिर, ज़ाहिर है, यह देखने वालों को समझ में आ जाएगा, ओह, यह यरूशलेम की घेराबंदी है। यह यरूशलेम की घेराबंदी है। तो यहाँ इसी के बारे में बात हो रही है।

लेकिन फिर उसे एक लोहे की प्लेट लानी थी, और यह ऐसी प्लेट थी जिसे आग पर रखा जाता था, और आप भोजन को आग के ऊपर रखते थे, और भोजन पक जाता था, लेकिन यह जलता नहीं था। इसका आग की लपटों से सीधा संपर्क नहीं होता था। और इसलिए, उसे अपनी पत्नी की रसोई से, मुझे लगता है, यह लोहे की प्लेट उधार लेनी थी, और उसे जमीन में स्थापित करना था ताकि यह एक अवरोध बन जाए।

और दूसरी तरफ ईंट थी जिसके चारों ओर घेराबंदी युद्ध के मॉडल थे, और फिर यह लोहे की प्लेट थी, और फिर दूसरी तरफ यह जकेल था। और, ज़ाहिर है, यह जकेल भगवान का प्रतिनिधि है, और यह कह रहा है कि यरूशलेम और मेरे बीच एक लोहे का पर्दा गिरने वाला है, और यरूशलेम की घेराबंदी की जा रही है, और मैं इसमें मदद नहीं करने वाला हूँ। भगवान इसमें मदद नहीं करने वाले हैं।

तो, यह जकेल इस प्रतीकात्मक कार्य में परमेश्वर का प्रतिनिधि है। तो, यह बहुत ही जटिल है। यह सभी प्रतीकात्मक कार्यों में सबसे अधिक जटिल है, और इन चीजों को एक साथ लाने और इसे सुलझाने में बहुत समय और ऊर्जा लगी होगी।

और इसलिए, यरूशलेम की इस आने वाली घेराबंदी में परमेश्वर और यरूशलेम के बीच एक लोहे का पर्दा है। यह सन् 597 के निर्वासितों के लिए संदेश है जो घर जाने के लिए तरस रहे थे और पूरी तरह से सोचते थे कि परमेश्वर उनके पक्ष में है और उन्हें बहुत जल्द घर ले जाएगा। लेकिन नहीं, हालात और भी बदतर होने वाले थे, और यरूशलेम की पूरी और अंतिम घेराबंदी होने वाली थी।

और इसलिए, निर्वासितों की इस उम्मीद के विपरीत कि वे जल्द ही घर लौट आएंगे, यह प्रतीकात्मक कार्रवाई कह रही है, नहीं, ऐसा नहीं होने वाला है। और इसलिए, यह इस्राएल के घराने के लिए एक संकेत है, यह श्लोक 3 के अंत में कहा गया है। और आपको जॉन का सुसमाचार याद होगा, जब यह यीशु के चमत्कारों की बात करता है, तो यह उन संकेतों की बात करता है जो बताते हैं कि यीशु कौन है। खैर, यहाँ, यह एक संकेत है, और इसे समझाया नहीं गया है।

इसकी कोई व्याख्या नहीं की गई है क्योंकि यह स्व-व्याख्यात्मक है। आपके पास मॉडल की कलाकृति और ईंट पर चित्र है, और आपके पास लोहे की प्लेट है, और यह वहाँ है। लेकिन फिर, श्लोक 4 में, तीसरा संकेत है, तीसरी प्रतीकात्मक क्रिया, पाँच में से तीसरी।

और यह एक तरह का नाटक है जिसमें यहजेकेल भाग लेता है। और वास्तव में, यह पूर्व प्रतीकात्मक क्रिया से जारी है, क्योंकि यह अभी भी वहाँ है। ईट अभी भी वहाँ है, मॉडल अभी भी वहाँ है, लोहे की प्लेट अभी भी वहाँ है, संभवतः जमीन में सीधी खड़ी है।

लेकिन अब, तुम्हें कुछ और करना होगा, ईजेकील। और उसे अपनी बाईं करवट लेटना होगा। और वह वहाँ है।

और उसे यह 390 दिनों तक करना है। खैर, मुझे खुशी है कि इसमें 390 रातें नहीं लिखी हैं क्योंकि सूर्यास्त के समय वह उठकर घर जा सकता था, संभवतः, और फिर अगली सुबह ड्यूटी पर आ सकता था और एक और दिन के लिए अपनी बाईं ओर लेट सकता था और फिर घर जा सकता था। और यह उल्लेखनीय संकेत आगे बढ़ता गया।

390 दिन। और फिर, उसके बाद, जब वह इतने लंबे समय तक, एक साल से ज़्यादा समय तक ऐसा करता रहा, तो उसे करवट बदलनी थी, उसे 40 दिनों तक अपनी दाईं करवट पर लेटना था। और बस, हो गया।

इसलिए, उसे यह प्रदर्शन करना था। और एक बात जो इस लेटने में कही गई है, वह श्लोक 7 में कही गई है, यह कहती है, अपनी बांह को खोलकर तुम इसके खिलाफ भविष्यवाणी करोगे। और उसे अपनी आस्तीन को पीछे खींचना था, और उसे अपनी बांह को इस तरह फैलाना था।

और यह ईश्वर की शत्रुता को दर्शाता है। ईश्वर की शत्रुता। और यह यहीं है।

यह इस गतिशील क्रिया का एक और हिस्सा है। तो, वहाँ क्या हो रहा है? 490 दिन हैं, और 40 दिन हैं। और अगर आप नए RSV की तुलना NIV से करेंगे, तो आप देखेंगे कि इसमें अंतर है।

और मुझे लगता है कि NRSV आधा सही है और NIV आधा सही है। खैर, NRSV शुरुआत के लिए क्या कहता है? यह कहता है, अपने बाएं तरफ लेट जाओ और इसराइल के घराने की सज़ा को अपने ऊपर रखो। यह बाएं तरफ लेटना इसराइल के घराने की सज़ा को दर्शाता है।

यहूदा के लोगों और बंधुओं के लिए दण्ड यही है। जितने दिन तुम वहाँ पड़े रहोगे, उतने दिन तुम उनका दण्ड भोगोगे। क्योंकि मैं उनके दण्ड के वर्षों के बराबर दिन तुम्हारे लिए ठहराता हूँ।

और इसलिए, तुम इस्राएल के घराने की सज़ा भुगतोगे। खैर, यह NRSV के अनुसार, सज़ा के संदर्भ में बाईं ओर का अर्थ है। लेकिन फिर आयत 6 में, एक बार फिर, तुम अपनी दाईं ओर लेटते हो, और एक बार फिर, तुम यहूदा के घराने की सज़ा भुगतते हो।

मैं तुम्हें चालीस दिन देता हूँ, हर साल के लिए एक दिन। तो, दोनों मामलों में यह सज़ा है। अगर आप NIV को देखें, तो ओह नहीं, यह सज़ा नहीं है। यह पाप है।

यह पाप है, यह पाप है। बाईं ओर, वह पाप को ढो रहा है, और वह यहूदा के पाप का प्रतिनिधित्व कर रहा है। और दाईं ओर, वह यहूदा के पाप को ढो रहा है।

और आप कह सकते हैं, अच्छा, आपके पास इस तरह के दो पूरी तरह से अलग अनुवाद कैसे हो सकते हैं? खैर, हिब्रू में एक शब्द, कभी-कभी हिब्रू में, एक शब्द का मतलब खुद और खुद का परिणाम हो सकता है। और इसलिए, इस एक शब्द का मतलब पाप या सजा हो सकता है, लेकिन संदर्भ के अनुसार। और इसलिए, NRSV एक अनुवाद मार्ग पर चलता है, NIV दूसरे अनुवाद मार्ग पर।

मुझे लगता है कि दोनों अनुवादों में इसका आधा हिस्सा गलत है। और पहले आधे हिस्से में, आपको 390 दिनों तक बायीं ओर इस्राएल के घराने के पाप को सहना होगा। और वह 390 दिन, सुलैमान के मंदिर में वापस जाने के समय को दर्शाता है, वे सभी वर्ष।

याद रखें, हमें बताया गया था कि वे और उनके पूर्वज आज तक मेरे विरुद्ध पाप करते रहे हैं, परमेश्वर के विरुद्ध पाप करने का एक लंबा इतिहास रहा है। और यह प्रतीकात्मक कार्य इसी का प्रतिनिधित्व करता है। यह पाप को सहना है, उस पाप का प्रतिनिधित्व करना है।

लेकिन फिर, लेकिन फिर वह सजा, वह पाप या सजा, जब दाहिनी ओर मुड़ना, दाहिनी ओर लेटना, वे 40 दिन, मुझे लगता है, वहाँ यह सजा है, वहाँ यह सजा है। और यह निर्वासन में भेजे जाने की सजा है। और निर्वासन को यहाँ 40 वर्षों के रूप में दर्शाया जा रहा है।

और इसलिए, प्रतीकात्मक कार्रवाई में, 40 दिन। और इसलिए, उस लंबी अवधि में लोगों के पाप का प्रतिनिधित्व करते हैं, और फिर उस छोटी अवधि के लिए निर्वासन में भेजे जाने की सजा देते हैं। और मुझे लगता है कि यह समझ में आता है।

तो, NRSV आधा सही है, और NIV आधा सही है। लेकिन मुझे लगता है कि हमें उनके बीच मध्यस्थता करनी होगी। ठीक है, यह तीसरा संकेत है।

और अब श्लोक 9 से 17 में चौथा चिन्ह। और यह अभी भी यरूशलेम की घेराबंदी से संबंधित है, लेकिन हमें ईंटों में मॉडल का उल्लेख अब और नहीं मिलता। और हम जरूरी नहीं मानते कि वे वहाँ थे, लेकिन वे वहाँ रहे होंगे।

तो, यह एक सीधा सिलसिला हो सकता है। और श्लोक 9 ऐसा ही सुझाव देता है। यह बस आगे बढ़ता रहता है, है न? आप गेहूँ और जौ, सेम और दाल, बाजरा और जौ लें, उन्हें एक बर्तन में डालें, और अपने लिए रोटी बनाएँ।

उसे अपनी पत्नी का काम करना है और कुछ रोटी बनानी है। लेकिन आम तौर पर, इसका मतलब यह है कि आप एक निश्चित अनाज से रोटी बनाएंगे। और आपके पास एक निश्चित मात्रा में गेहूँ है, और आप गेहूँ की रोटी बनाएंगे।

और आप बाजरा लें, और आप बाजरे की रोटी बनाएँगे। लेकिन मुद्दा यह है कि यह यरूशलेम में होने वाली स्थिति का एक प्रतिनिधित्व है, जहाँ भोजन बहुत दुर्लभ है, और आपके पास यहाँ-वहाँ अनाज के टुकड़े, छोटे-मोटे सामान हैं जिन्हें आपको इकट्ठा करना है, और इस तरह की मिश्रित,

सभी प्रकार की रोटी बनानी है। मुझे लगता है कि आज सुपरमार्केट में आप एक रोटी खरीद सकते हैं, जिसे अगर मुझे सही याद है तो यह जेकेल 4:9 कहा जाता है। और यह विभिन्न अनाजों का मिश्रण है।

और इसे ऐसे पेश किया जाता है जैसे कि यह कुछ अच्छा है। लेकिन इस संदर्भ में, यह कुछ बुरा है। बस ये सारी छोटी-मोटी बातें एक साथ रखी गई हैं क्योंकि इसके अलावा और कुछ नहीं है।

आप गेहूं की रोटी नहीं बना सकते। आपको बस पर्याप्त बीज और अनाज इकट्ठा करना है, ताकि आपके पास एक रोटी हो। और उसे बताया गया है कि उसे यह रोटी खानी है, हर दिन एक रोटी बनानी है ताकि एक नई रोटी बनाकर उसे खाया जा सके।

और हमें श्लोक 10 में बताया गया है कि उस रोटी का वजन क्या है। यह 20 शेकेल है। और आपके और मेरे हिसाब से यह 8 औंस के बराबर है।

इसलिए, उसे प्रतिदिन 8 औंस की रोटी खानी है। अगर आप इसकी तुलना उस आधुनिक रोटी से करें जो मैं खरीदता हूँ, तो वह आम तौर पर 20 औंस की होती है। और इस तरह उस आकार की रोटी में साढ़े पाँच स्लाइस ब्रेड होगी, जो पूरे दिन के लिए एकमात्र भोजन है।

साढ़े पाँच स्लाइस ब्रेड और इससे ज़्यादा कुछ नहीं, कोई और खाना नहीं। और यह आने वाले घेराबंदी में भोजन की कमी का संकेत है। और फिर उसे थोड़ा पानी पीना है।

और हमें बताया गया कि पानी कितना है, मुर्गी के पानी का छठा हिस्सा। और यह एक क्वार्ट के दो तिहाई के बराबर है। और एक क्वार्ट दो पिट होता है, इसलिए पूरे दिन के लिए यह एक पिट से थोड़ा ज़्यादा पानी है।

और तपती धूप में, आपको वास्तव में एक दिन में एक पिट से ज़्यादा पानी की ज़रूरत होती है। और यह है। लेकिन यरूशलेम में कुण्ड सूख चुके होंगे और वहाँ पानी नहीं होगा, पानी नहीं।

तो, यह भोजन और पानी की कमी है, जिसका प्रतिनिधित्व किया जा रहा है। और फिर, श्लोक 12 में, यह जेकेल कहता है, नहीं, मैं ऐसा नहीं करने जा रहा हूँ। उसे क्या करने के लिए कहा गया है? और तुम इसे जौ के केक की तरह खाओगे, रोटी, तुम इसे जौ के केक की तरह खाओगे, इसे मानव गोबर पर उनके सामने पकाकर खाओगे।

अब, यह इस तथ्य को संदर्भित करता है कि आम तौर पर, ईंधन के लिए, लकड़ी और ऐसी ज्वलनशील चीजों के अलावा, आप गोबर, भेड़ और गाय के गोबर को सुखाते हैं, और आपके पास आग पर इस्तेमाल के लिए आपूर्ति होती है। और तब तक कोई गंध नहीं होगी और इसलिए यह बहुत बुरा नहीं होगा। और इसलिए आम तौर पर प्राचीन काल में लोग ईंधन के रूप में सूखे जानवरों के गोबर पर खाना बनाते थे।

लेकिन इसका मतलब यह है कि घेराबंदी में सभी जानवरों को भोजन के लिए मार दिया गया है। अब और जानवर नहीं। ठीक है, मानव गोबर का उपयोग करें, उसे सुखाएँ।

और यह जकेल कहता है, नहीं, मैं ऐसा नहीं करने जा रहा हूँ। यह बहुत बुरा है। और अगर आप पूछें कि क्यों, तो इसका कारण यह है कि वह एक पुजारी के रूप में बोल रहा है, और मानव मल अशुद्ध है।

इसलिए एक पुजारी के रूप में वह ऐसा नहीं कर सकते। उनके पुरोहिती प्रशिक्षण में ऐसा नहीं करने की बात कही गई है। और इसलिए, यह सिर्फ एक भावनात्मक प्रतिक्रिया नहीं है, जैसा कि हम कर सकते हैं।

यह एक तरह की पुरोहिती मजबूरी है, पुरोहिती प्रवृत्ति है, और मैं ऐसा नहीं करने जा रहा हूँ। और भगवान कहते हैं, ठीक है, मैं देख रहा हूँ कि तुम कितने परेशान हो। और वह एक रियायत देते हैं।

ठीक है, आप गाय का गोबर ले सकते हैं, जो यहाँ बेबीलोनिया में पूरी तरह से उपलब्ध है। और मानव गोबर के बजाय जिस पर आप अपनी रोटी बना सकते हैं। मैं प्रतीकात्मकता को थोड़ा बिगाड़ने जा रहा हूँ, लेकिन ठीक है, आप ऐसा कर सकते हैं।

तो यह परमेश्वर की बहुत अच्छी बात थी, परमेश्वर की कृपा थी, कि उसने यह जकेल को छोड़ दिया। मुझे लगता है कि अगर यह जकेल ने आगे बढ़ने की कोशिश की तो उसे दिल का दौरा पड़ जाएगा। और फिर यहाँ एक छोटी सी टिप्पणी है, श्लोक 16।

हे मनुष्य, मैं यरूशलेम में रोटी की छड़ी को तोड़ने जा रहा हूँ। वे तौलकर और भय के साथ रोटी खाएँगे। वे नापकर और घबराहट के साथ पानी पीएँगे।

सोच रहा हूँ कि क्या कल फिर से शराब मिलेगी और फिर से खाना मिलेगा। क्योंकि सब कुछ बहुत कम होगा, और रोटी का वह डंडा, यह एक रूपक है।

रोटी ही जीवन का आधार है। रोटी ही जीवन का आधार है। एनआईवी रोटी के आधार के बजाय भोजन की आपूर्ति का वर्णन करता है।

और फिर अध्याय 5 में पाँचवाँ और अंतिम संकेत। वह एक तेज़ तलवार लेता था और उसे नाई के उस्तरे की तरह इस्तेमाल करता था और उसे तुम्हारे सिर और दाढ़ी पर चलाता था। वह अपने सिर और चेहरे के बाल काट लेता था। और यह कुछ अशुभ है क्योंकि तुमने ऐसा शोक की रस्म के हिस्से के रूप में किया था।

और इसलिए, इस बारे में शुरू से ही बहुत नकारात्मक भावना है, भले ही इसकी व्याख्या कैसे की जाए। लेकिन एक बार फिर, यह घेराबंदी से संबंधित है। क्योंकि वह एक तिहाई, एक तिहाई बाल, अध्याय 5 की श्लोक 2 है। तुम शहर के अंदर आग में जलोगे।

और वह शहर, वह ईंट है जिस पर शहर बनाया गया है, शहर की तस्वीर बनाई गई है। और उसे उस बाल को तीन भागों में बाँटना है। एक भाग ईंट पर रखना है, और उसे भी आग लगानी है।

और इसलिए, यह यरूशलेम के विनाश और यरूशलेम की घेराबंदी के दौरान मानव जीवन की हानि का उल्लेख कर रहा है। और जब बेबीलोन के लोग आगे बढ़ते हैं और हर जगह आग लगाते हैं, तो लोग मारे जाते हैं जैसे कि वे कैलिफोर्निया के जंगल में अपने घरों के अंदर आग में मारे गए थे। और एक दूसरा ढेर है, और उसे ईंट के चारों ओर फैलाना है।

तो, हम अभी भी यरूशलेम की घेराबंदी के संदर्भ में हैं। और इसे तलवार से काट दिया जाना है, इसे काट देना है, उन बालों के टुकड़ों को। और यह घेराबंदी के परिणामस्वरूप यरूशलेम के नागरिकों के निष्पादन को इंगित करता है।

और तीसरे ढेर को हवा में फेंका जाना था। और यह घेराबंदी में जबरन पलायन का संकेत है। और तलवार हवा में जाते ही उसे काट देगी।

और इसलिए, निर्वासन में जाने वाले कुछ लोगों को मार दिया जाएगा। और फिर उस तीसरे ढेर से बस कुछ बाल ही बचाए जाएँगे। लेकिन इनमें से भी कुछ को लेकर यरूशलेम का प्रतिनिधित्व करने वाली ईंट पर आग में डाल दिया जाएगा।

फिर, 5 से 17 तक, हमें इस पाँचवीं प्रतीकात्मक कार्रवाई की एक लंबी व्याख्या मिलती है। और यह बताता है कि यरूशलेम को क्यों गिरना पड़ा। और हम इस तरह के विद्रोह पर वापस आते हैं।

यरूशलेम को मैंने राष्ट्रों के केंद्र में रखा है, लेकिन उसने मेरे अध्यादेशों के विरुद्ध विद्रोह किया है। और उस सिथ्योन परंपरा की प्रतिध्वनि है। भजन संहिता में सिथ्योन का गीत ईश्वर का शहर है।

मैंने यरूशलेम को केंद्र में रखा है, राष्ट्रों के बिल्कुल केंद्र में, उसके चारों ओर अन्य राष्ट्रों के साथ। और इसलिए, यह मेरे ध्यान का केंद्र है। लेकिन इसके विपरीत, यरूशलेम ने मेरे अध्यादेशों के विरुद्ध विद्रोह किया है।

अध्याय 2 और अध्याय 3 में, हमने विद्रोही और विद्रोह और विद्रोही जैसे शब्दों का बार-बार प्रयोग किया है। और इसलिए, इसे अब वहीं से उठाया जा रहा है। और यरूशलेम परमेश्वर के ध्यान का केंद्र रहा था, लेकिन उस विशेषाधिकार को वापस ले लिया जाना है।

और इसका कारण सावधानीपूर्वक समझाया गया है। और यह एक सबक था जो 597 के युद्ध बंदियों को सीखना था। बाद में, 587 निर्वासितों को विद्रोह के उस इतिहास को याद रखना पड़ा, एक लंबा विद्रोह, जो अंततः यरूशलेम को पकड़ लेगा ताकि इसे नष्ट कर दिया जाए।

पद 13 में क्रोध का उल्लेख है। मेरा क्रोध शांत हो जाएगा। मैं उन पर अपना क्रोध उतारकर अपने आपको संतुष्ट कर लूंगा।

और क्रोध पर बहुत ज़ोर दिया गया है। और हम संक्षेप में नए नियम के समानांतर का उल्लेख कर सकते हैं। जब रोमियों को लिखे गए पत्र में सुसमाचार, अच्छी खबर दी जाती है, तो उसे बुरी खबर से शुरू करना पड़ता है।

परमेश्वर का क्रोध, परमेश्वर का क्रोध, संसार पर पड़ने वाला है। और सुसमाचार की अच्छी खबर सुनने से पहले उस बुरी खबर को सुनना ज़रूरी है। नए नियम के संस्करण में, न्याय आता है।

लेकिन परमेश्वर स्वयं न्याय को अपने में समाहित कर लेता है। लेकिन यही एकमात्र कारण है। यीशु के क्रूस के न्याय को अपने में समाहित करने के माध्यम से ही शुभ समाचार मिल सकता है।

लेकिन एक बार फिर, बुरी खबर और बुरी खबर के बारे में जागरूकता और क्रोध, परमेश्वर के क्रोध का होना ज़रूरी है, तभी अच्छी खबर आ सकती है। और एक तरह से, एक अलग तरीके से, यहजेकेल की किताब इसी के बारे में है। पहले न्याय और फिर उद्धार।

अच्छी खबर से पहले बुरी खबर। अगर हमारे पास समय होता, लेकिन आप खुद ही इसका पता लगा सकते हैं, तो अध्याय 5 में उस व्याख्या में हमारे पास एक महान न्याय की भविष्यवाणी है। आम तौर पर, एक न्याय की भविष्यवाणी पहले आरोप और फिर सज़ा से बनी होती है। और सज़ा दो तरह की होती है।

पहला, ईश्वर को व्यक्तिगत रूप से हस्तक्षेप करना है। मैं कुछ करने जा रहा हूँ। मैं कुछ करने जा रहा हूँ, फैसले में कहा गया है।

और फिर इसके मानवीय परिणाम सामने आएंगे। इसका परिणाम मानव आबादी के बीच त्रासदी, आपदा, नुकसान और बर्बादी होगी। और यही पैटर्न है।

हमारे पास तीन अलग-अलग चरण हैं। अध्याय 5:5 से 17 में उस व्याख्या में एक ट्रिपल जजमेंट ऑरेकल है। यह सभी भिन्नताएं हैं, मामूली भिन्नताएं हैं, जो इस पैटर्न को उठाती हैं और इसे तीन तरीकों से दोहराती हैं।

और इसलिए, न्याय की भविष्यवाणी के एक रूप के संदर्भ में यह खुलासा किया गया है जो हमारे पास 5 से 17 तक बहुत लंबे रूप में है। तो अगली बार, अध्याय 6 और 7 हमारा विषय होंगे।

यह डॉ. लेस्ली एलन द्वारा यहजेकेल की पुस्तक पर उनके शिक्षण में है। यह सत्र 3 है, एक बाद का कमीशन, यरूशलेम के लिए संकेत और उनका अर्थ। यहजेकेल 3:16-5:17।